International Journal of Social Research and Development
www.socialsciencejournal.net
Online ISSN: 2664-8709, Print ISSN: 2664-8695
Received: 01-01-2023, Accepted: 16-01-2023, Published: 01-02-2023
Volume 5, Issue 1, 2023, Page No. 53-56

संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रवासी भारतीयः एक अध्ययन

सुनीता बघेले
सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, भगवान बिरसा मुंडा शासकीय महाविद्यालय दिव्यगवा, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
प्रवासी भारतीय विश्व के अनेक देशों में फैले हुए हैं। 48 देशों में रह रहे प्रवासियों की जनसंख्या करीब 2 करोड़ है। इनमें से 11 देशों में 5 लाख से ज्यादा प्रवासी भारतीय वहां की औसत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं और वहां की आर्थिक व राजनीतिक दशा व दिशा को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहां उनकी आर्थिक, शैक्षणिक व व्यावसायिक दक्षता का आधार काफी मजबूत है। वे विभिन्न देशों में रहते हैं, अलग भाषा बोलते हैं परन्तु वहां के विभिन्न क्रियाकलापों में अपनी महती भूमिका निभाते हैं। प्रवासी भारतीयों को अपनी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखने के कारण ही साझा पहचान मिली है और यही कारण है जो उन्हें भारत से गहरे जोड़ता है। प्रवासी भारतीय जहां–जहां बसे वहां उन्होंने आर्थिक तंत्र को मजबूती प्रदान की और बहुत कम समय में अपना स्थान बना लिया। वे मजदूर, व्यापारी, शिक्षक अनुसंधानकर्ता, खोजकर्ता, डाक्टर, वकील, इंजीनियर, प्रबंधक, प्रशासक आदि के रूप में दुनियाभर में स्वीकार किए गए। प्रवासियों की सफलता का श्रेय उनकी परंपरागत सोच, सांस्कृतिक मूल्यों और शैक्षणिक योग्यता को दिया जा सकता है। कई देशों में वहां के मूल निवासियों की अपेक्षा भारतवंशियों की प्रति व्यक्ति आय ज्यादा है। वैश्विक स्तर पर सूचना तकनीक के क्षेत्र में क्रांति में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसके कारण भारत की विदेशों में छवि निखरी है। प्रवासी भारतीयों की सफलता के कारण भी आज भारत आर्थिक विश्व में आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है।

मूलशब्दः संयुक्त राज्य अमेरिका, भारतीय, प्रवासी

प्रवासी वह व्यक्ति होता है जो अपनी नागरिकता वाले देश से बाहर रहता है। यह शब्द अक्सर एक पेशेवर या कुशल श्रमिक को संदर्भित करता है जो अपने मूल देश में लौटने का इरादा रखता है। हालाँकि, यह सेवानिवृत्त लोगों, कलाकारों और अन्य व्यक्तियों को भी संदर्भित कर सकता है जिन्होंने अपने मूल देश से बाहर रहना चुना है। शब्द 'डायस्पोरा' ग्रीक शब्द डायस्पेयरिन से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'फैलाव। डायस्पोरा ग्रीक मूल का शब्द है जिसका अर्थ है बीज विखेरना या बुआई करना। यह उन लोगों के संदर्भ में प्रयुक्त होता है जो रोजगार, व्यापार या किसी अन्य प्रयोजन से अपनी जन्मभूमि छोड़ देते और विश्व के दूसरे भागों में निवास करते हैं।भारतीय डायस्पोरा एक जेनेरिक शब्द है जो उन लोगों को संबोधित करने के लिए प्रयुक्त होता है जिन्होंने भूभागों से उत्प्रवास किया है जो वर्तमान में भारत गणतंत्र की सीमा के भीतर हैं। इनमें एनआरआई (अनिवासी भारतीय) और पीआईओ (भारतीय मूल के व्यक्ति) आते हैं। भारतीय डायस्पोरा 30 मिलियन से अधिक होने का अनुमान हैं। भारत सरकार भारतीय डायस्पोरा के महत्व को समझती है क्योंकि इसने भारत को आर्थिक, वित्तीय और वैश्विक लाभ पहुंचाया है।आज भारतीय डायस्पोरा विश्व की संस्कृति में एक महत्वपूर्ण और कुछ अर्थों में विशिष्ट बल बनाता है। इस अनुभाग में भारत सरकार द्वारा भारतीय डायस्पोरा को प्रस्तावित विभिन्न योजनाओं और प्रोत्साहनों का ज्ञान गहराई से देते हुए उसकी बोधात्मक आवश्यकताओं को पूरा किया गया है.

जो लोग भारत छोड़कर विश्व के दूसरे देशों में जा बसे हैं उन्हे प्रवासी भारतीय कहते हैं। ये विश्व के अनेक देशों में फैले हुए हैं। 48 देशों में रह रहे प्रवासियों की जनसंख्या करीब 2 करोड़ है। इनमें से 11 देशों में 5 लाख से ज्यादा प्रवासी भारतीय वहां की औसत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं और वहां की आर्थिक व राजनीतिक दशा व दिशा को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहां उनकी आर्थिक, शैक्षणिक व व्यावसायिक दक्षता का आधार काफी मजबूत है। वे विभिन्न देशों में रहते हैं, अलग भाषा बोलते हैं परन्तु वहां के विभिन्न क्रियाकलापों में अपनी महती भूमिका निभाते हैं। प्रवासी भारतीयों को अपनी सांस्कृतिक विरासत को अक्षुण्ण बनाए रखने के कारण ही साझा पहचान मिली है और यही कारण है जो उन्हें भारत से गहरे जोड़ता है।

प्रवासी भारतीय जहां–जहां बसे वहां उन्होंने आर्थिक तंत्र को मजबूती प्रदान की और बहुत कम समय में अपना स्थान बना लिया। वे मजदूर, व्यापारी, शिक्षक अनुसंधानकर्ता, खोजकर्ता, डाक्टर, वकील, इंजीनियर, प्रबंधक, प्रशासक आदि के रूप में दुनियाभर में स्वीकार किए गए। प्रवासियों की सफलता का श्रेय उनकी परंपरागत सोच, सांस्कृतिक मूल्यों और शैक्षणिक योग्यता को दिया जा सकता है। कई देशों में वहां के मूल निवासियों की अपेक्षा भारतवंशियों की प्रति व्यक्ति आय ज्यादा है। वैश्विक स्तर पर सूचना तकनीक के क्षेत्र में क्रांति में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसके कारण भारत की विदेशों में छवि निखरी है। प्रवासी भारतीयों की सफलता के कारण भी आज भारत आर्थिक विश्व में आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है।

अनिवासी भारतीय

'अनिवासी भारतीय (Non & Resident Indian & NRI) का अर्थ ऐसे नागरिकों से है जो भारत के बाहर रहते हैं और भारत के नागरिक हैं या जो नागरिकता अधिनियम, 1955 की धारा 7 (।) के दायरे में 'विदेशी भारतीय नागरिक' कार्डधारक हैं। वह वित्तीय वर्ष के दौरान 182 दिनों या उससे अधिक समय तक भारत में नहीं रहा है या यदि वह उस वर्ष से पहले 4 वर्षों के दौरान 365 दिनों से कम और उस वर्ष में 60 दिनों से कम समय तक भारत में रहा है।

भारतीय मूल का व्यक्ति

भारतीय मूल के व्यक्ति (Person of Indian Origin & PIO) का मतलब एक विदेशी नागरिक (पाकिस्तान, अफगानिस्तान,

बांग्लादेश, चीन, भूटान, श्रीलंका और नेपाल को छोड़कर) से है, जो वह व्यक्ति जिसके पास भारतीय पासपोर्ट हो या उनके माता–पिता, दादा दादी, परदादा–दादी में से कोई भी भारत सरकार अधिनियम, 1935 द्वारा परिभाषित भारतीय क्षेत्र में पैदा हुआ था और स्थायी रूप से निवास किया था या जिसकी शादी किसी भारतीय नागरिक या च्ब् से हुई है। च्ब् श्रेणी को वर्ष 2015 में समाप्त कर ब्ब् श्रेणी के साथ विलय कर दिया गया था।

ओवरसीज सिटीजन ऑफ इंडिया

प्रवासी भारतीयों की मांग को ध्यान में रखते हुए एक छद्म नागरिकता योजना बनाई गई, जिसे ' विदेशी भारतीय नागरिकता' आमतौर पर ओसीआई कार्डधारक के रूप में जाना जाता है। प्रवासी भारतीयों को अनिवासी भारतीयों के समान सभी अधिकार (कृषि एवं बागान अधिग्रहण का अधिकार) दिए गए हैं। वर्ष 2005 में ब्वे की एक अलग श्रेणी बनाई गई थी। विदेशी नागरिक को ब्वे कार्ड दिया जाता है जो 26 जनवरी, 1950 को भारत का नागरिक होने के योग्य था। 26 जनवरी, 1950 को या उसके बाद किसी भी समय भारत का नागरिक था या 15 अगस्त, 1947 के बाद भारत का हिस्सा बनने वाले क्षेत्र से संबंधित था। ऐसे व्यक्तियों के नाबालिग बच्चे, सिवाय उनके जो पाकिस्तान या बांग्लादेश के नागरिक हैं, भी ब्वे कार्ड के लिये पात्र हैं।

'अमरीकन इण्डियन' के अतिरिक्त संयुक्त राज्य अमरीका के सभी लोग बाहर से आए हुए 'आगत जातियों' के हैं। उनकी विशाल संख्या यूरोप से आयी थी और अन्तर्राष्ट्रीय तनाव के समय वे अब भी उस पुराने महाद्वीप से घृणा और प्रेम करते हैं जिससे कि वे नाता तोड़ चुके हैं। यूरोप न केवल उनकी सभ्यता की मातृ–भूमि है, वरन् उनके अनुयायियों का लगभग आधा भाग बसता भी वहीं है।

भारतीय अमेरिकी भारत के वंश वाले संयुक्त राज्य अमेरिका के नागरिक हैं। एशियाई भारतीय शब्द का प्रयोग संयुक्त राज्य अमेरिका में मूल अमेरिकियों के साथ भ्रम से बचने के लिए किया जाता है, जिन्हें ''भारतीय'' या ''अमेरिकी भारतीय'' भी कहा जाता है। 4.4 मिलियन से अधिक की आबादी के साथ, भारतीय अमेरिकी अमेरिकी आबादी का लगभग 1.35: हैं और दक्षिण एशियाई अमेरिकियों का सबसे बड़ा समूह, सबसे बड़ा एशियाई–अकेला समूह और चीनी अमेरिकियों के बाद एशियाई अमेरिकियों का सबसे बड़ा समूह हैं। . भारतीय अमेरिकी संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे अधिक कमाई करने वाला जातीय समूह हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका में बड़े पैमाने पर भारतीय आप्रवासन अपेक्षाकृत हाल ही में हुआ है, 1965 में कांग्रेस द्वारा राष्ट्रीय मूल के कोटा को समाप्त करने के कदम के बाद, जो बड़े पैमाने पर यूरोपीय लोगों के लिए आप्रवासन को सीमित करता था। बाद के दशकों में भारत और अन्य गैर–यूरोपीय देशों से आगमन की गति तीव्र रही है। आज, मैक्सिकन के बाद और चीनी और फिलिपिनो से आगे, भारतीय दूसरे सबसे बड़े अमेरिकी आप्रवासी समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं। 2021 तक संयुक्त राज्य अमेरिका में रहने वाले 2.7 मिलियन भारतीय अप्रवासी कुल विदेशी मूल की आबादी का 6 प्रतिशत थे, और उनकी संख्या लगातार बढ़ रही है।

19वीं सदी और 20वीं सदी की शुरुआत में भारत से आने वाले मुख्य रूप से कम–कुशल प्रवासी श्रमिकों के विपरीत, द्वितीय विश्व युद्ध के बाद के अधिकांश भारतीय प्रवासी पेशेवर नौकरियों में काम करने या अमेरिकी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अध्ययन करने के लिए आए थे। आज, अधिकांश भारतीय रोजगार और परिवार–आधारित मार्गों से आते हैं। भारत अमेरिकी उच्च शिक्षा में नामांकित अंतरराष्ट्रीय छात्रों की दूसरी सबसे बड़ी संख्या का स्रोत है और इसके नागरिकों को उच्च–कुशल श्रमिकों के लिए नियोक्ता–प्रायोजित एच–1बी अस्थायी वीजा का बहुमत प्राप्त होता है। ये रास्ते उन विशेषताओं में प्रतिबिंबित होते हैं जो भारतीयों को अलग करते हैं: चार–पांचवें भारतीय आप्रवासी वयस्कों के पास कम से कम स्नातक की डिग्री है और उनकी औसत घरेलू आय सभी आप्रवासियों और अमेरिका में जन्मे लोगों की तुलना में दोगुनी से अधिक है।

भारतीय आप्रवासन में एक कम ज्ञात प्रवृत्ति अमेरिका–मेक्सिको सीमा पर अनधिकृत आगमन में वृद्धि है। अक्टूबर 2021 और सितंबर 2022 के बीच, सीमा अधिकारियों को अमेरिकी दक्षिणी सीमा पर 18,300 बार भारतीय प्रवासियों का सामना करना पड़ा, जो एक साल पहले की समान अवधि में 2,600 से अधिक है। यह वृद्धि भारत में गैर–हिंदुओं के खिलाफ बढ़ते धार्मिक और राजनीतिक उत्पीड़न, घरेलू आर्थिक अवसरों की कमी, यात्रा पर महामारी प्रतिबंधों में कमी और विस्तारित अमेरिकी बैकलॉग के कारण हो सकती है, जिसने कानूनी आप्रवासन के लिए लंबी कतारें पैदा कर दी हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय प्रवासियों का एक समृद्ध और जटिल इतिहास है जो 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत तक का है। अमेरिका में भारतीय आप्रवासन की पहली लहर शिक्षा और बेहतर आर्थिक अवसरों की इच्छा से प्रेरित थी। अमेरिका में भारतीय आप्रवासन की पहली महत्वपूर्ण लहर 1800 के दशक के अंत में शुरू हुई और यह मुख्य रूप से शिक्षा की इच्छा से प्रेरित थी। कई युवा भारतीय विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में अध्ययन करने के लिए अमेरिका गए, जहां उन्होंने बहुमूल्य ज्ञान और कौशल प्राप्त किया जिसे वे बाद में भारत वापस ले आए। आप्रवासन की इस शुरुआती लहर के सबसे प्रसिद्ध उदाहरणों में से एक भगत सिंह थिंड हैं, जो 1913 में कृषि में डिग्री हासिल करने के लिए अमेरिका चले गए थे। थिंड बाद में एक प्रसिद्ध आध्यात्मिक शिक्षक और लेखक बन गए, और उनके काम का व्यापक रूप से अध्ययन और प्रशंसा की जाती रही।

20वीं सदी की शुरुआत में, भारतीय आप्रवासियों ने अमेरिकी समाज में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी शुरू कर दी, शारीरिक श्रम और पेशेवर पदों सहित विभिन्न प्रकार की नौकरियां कीं। कई भारतीय अप्रवासी कृषि क्षेत्र में काम करते थे, विशेष रूप से पश्चिमी तट के राज्यों में, जहाँ उन्हें खेत मजदूर और क्षेत्र श्रमिक के रूप में नियोजित किया जाता था। अन्य लोग कारखानों और मिलों में या मैकेनिक और इंजीनियर के रूप में काम करते थे। समय के साथ, जैसे ही उन्होंने खुद को अमेरिका में स्थापित किया, कई भारतीय अप्रवासियों ने उच्च शिक्षा और पेशेवर करियर अपनाकर डॉक्टर, वैज्ञानिक और इंजीनियर बन गए। भारतीय आप्रवासन की इस दूसरी लहर के सबसे उल्लेखनीय उदाहरणों में से एक एस.आर.रंगनाथन हैं, जो पुस्तकालय विज्ञान में डिग्री हासिल करने के लिए 1920 में अमेरिका चले गए थे। रंगनाथन एक प्रसिद्ध पुस्तकालयाध्यक्ष और सूचना वैज्ञानिक बन गए और उनके काम का भारत और दुनिया भर में पुस्तकालय विज्ञान के विकास पर बड़ा प्रभाव पड़ा। 1960 के दशक में अमेरिका में भारतीय प्रवासियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई, क्योंकि अमेरिकी सरकार ने आप्रवासन प्रतिबंधों में ढील दी और अधिक कुशल श्रमिकों को देश में प्रवेश करने की अनुमति दी। आप्रवासन की यह लहर मुख्य रूप से उच्च शिक्षित पेशेवरों और उनके परिवारों से बनी थी, और उन्होंने भारतीय–अमेरिकी समुदाय की वृद्धि और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना जारी रखा है।

आज, भारतीय–अमेरिकी समुदाय अमेरिका में सबसे तेजी से बढ़ते और सबसे समृद्ध जातीय समूहों में से एक है, जिसकी देश भर के कई प्रमुख शहरों में मजबूत उपस्थिति है। भारतीय–अमेरिकियों ने व्यवसाय, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और कला सहित विभिन्न क्षेत्रों में अमेरिकी समाज में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके सबसे उल्लेखनीय उदाहरणों में से एक ळववहसम के सीईओ सुंदर पिचाई हैं, जो इंजीनियरिंग में पीएचडी करने के लिए 2004 में अमेरिका चले गए थे। पिचाई तकनीकी उद्योग में सबसे प्रभावशाली अधिकारियों में से एक बन गए, जिससे ळववहसम और कई अन्य प्रौद्योगिकी कंपनियों की वृद्धि और विकास में मदद मिली। अमेरिका में भारतीय प्रवासियों की उत्पत्ति कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और अपने और अपने परिवार के लिए बेहतर जीवन बनाने की प्रतिबद्धता की कहानी है। रास्ते में कई चुनौतियों का सामना करने के बावजूद, भारतीय–अमेरिकी दृढ़ रहे हैं और अमेरिकी समाज का एक संपन्न और प्रभावशाली हिस्सा बन गए हैं।

भारतीय प्रवासियों का अमेरिका में तीन चरणों में विकास हुआ है, पहला शिक्षा और रोजगार की तलाश, दूसरा, प्रेषण का प्रमुख स्रोत (2017 में यू.एस से भारत में +10.657 बिलियन का वार्षिक प्रेषण) और तीसरा यू.एस की गतिशीलता को प्रभावित करने वाले प्रभावी खिलाड़ियों के रूप में। अमेरिका मे भारतीय प्रवासी एक प्रभावी सार्वजनिक कूटनीति उपकरण हैं और अपने नैतिकता, अनुशासन, हस्तक्षेप ना करने और स्थानीय लोगों के साथ शांतिपूर्वक जीवन बिताने के लिए माने जाते हैं। ये मूल्य अंततः यू.एस में भारतीयों की पहचान बनाने, छवि प्रक्षेपण और छवि बनाने में योगदान करते हैं।

अमेरिका में कई हिंदी रेडियो स्टेशन उपलब्ध हैं जैसे कि आर.बी. सी रेडियो, इजी रेडियो, रेडियो हमसफर, देसी जंक्शन, रेडियो सलाम नमस्ते, फनएशिया रेडियो और संगीत। भारतीय केबल चौनल जैसे कि सोनी टीवी, जी टीवी, स्टार प्लस, कलर्स और क्षेत्रीय चौनल भी प्रसारित होते हैं। कई भारतीय मूल के कलाकार हॉलीवुड का हिस्सा हैं। इनमें से कुछ प्रतिभाशाली कलाकार हैं प्रियंका चोपड़ा, पद्मा लक्ष्मी, फ्रीडा पिंटो, कुणाल नैय्यर, मीरा नायर और मधुर जाफरी। मेट्रोपॉलिटन जिलों की सिनेमाघरों में भी बॉलीवुड फिल्में दिखाई जाती हैं। अधिकांश भारतीय त्योहार उसी उत्साह और जोश के साथ मनाए जाते हैं विशेष रूप से सार्वजनिक समारोहों और बॉलीवुड नृत्य के माध्यम से दिवाली का त्यौहार मनाया जाता है। धार्मिक भारत के हिंदू 51 प्रतिशत, सिख 5 प्रतिशत, जैन 2 प्रतिशत, मुस्लिम 10 प्रतिशत और ईसाई 18 प्रतिशत समुदायों ने संयुक्त राज्य अमेरिका में दृढ़ता के साथ अपने धर्म को स्थापित किया है। हिंदू भारतीयों ने यू.एस में हिंदू अमेरिकन फाउंडेशन का गठन किया है। ये भारतीय धार्मिक समुदाय दान कार्य में सहायता करते हैं जब भी अमेरिका में आवश्यकता पड़ती है। मुख्य रूप से खालसा फूड पेंट्री और खालसा पीस कॉर्प्स नियमित रूप से अमेरिका में रहने वाले कम आय वाले परिवारों को सहायता प्रदान करते हैं और किसी भी प्राकृतिक आपदा के बाद के परिदृश्य में भी सहायता करते हैं। 'द सिखसेस' संगठन भोजन और कपड़ों के रूप में और सार्वजनिक सेवा के अवसर पैदा करके सहायता प्रदान करता है।

भारतीय प्रवासियों ने उच्च शिक्षा प्राप्त की है, समग्र यू.एस में 25 साल तक की उम्र तक बैचलर्स डिग्री पूरा करने वाले 31 प्रतिशत लोगों की तुलना में 79 प्रतिशत भारतीय प्रवासी 25 साल की उम्र तक बैचलर्स डिग्री पूरा करते हैं। इसके अलावा 25 और उससे अधिक आयु वर्ग में अमेरिका की मात्र 11 प्रतिशत सामान्य जनता की तुलना में 44 प्रतिशत भारतीय प्रवासी मास्टर्स डिग्री, पी. एचडी. अथवा उन्नत पेशेवर डिग्री अर्जित कर चुके हैं। 2015–16 स्कूली वर्ष में, लगभग 166,000 भारतीय अप्रवासियों को अमेरिका के उच्च शिक्षा संस्थानों में दाखिला दिया गया था, जो समग्र 1 मिलियन अंतर्राष्ट्रीय विद्यार्थियों का 16 प्रतिशत हिस्सा था। वे मुख्य रूप से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एस. टी.ई.एम) क्षेत्रों में काम करके अन्य नागरिकों को पछाड़ते हैं। शैक्षणिक वर्ष 2022–23 में भारत से संयुक्त राज्य अमेरिका जाकर पढ़ने वाले विदेशी छात्रों की संख्या 35 प्रतिशत बढ़कर 268923 छात्रों के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गई है। अमेरिका से उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले भारतीय छात्रों की संख्या 63 प्रतिशत बढ़कर 165936 हो गई जिससे पिछले साल की तुलना में इस साल लगभग 64000 छात्रों की वृद्धि हुई है।

भारतीय प्रवासी अमेरिका में सबसे अमीर जातीय समुदायों में से एक है। सभी भारतीय वंशजों की औसत वार्षिक आय लगभग + 89,000 है, जो कि अमेरिकी नागरिकों की औसत वार्षिक आय + 50,000 से अधिक है। निवेश आय के मामले में, 15 प्रतिशत अमेरिकी लोगों की तुलना में 20 प्रतिशत भारतीय परिवारों की कुल आय में लाभांश से मिलने वाली आय शामिल थी, जबकि 43 प्रतिशत अमेरिकी नागरिकों की तुलना में 52 प्रतिशत भारतीयों को ब्याज से आय मिलती थी। 2000 की अमेरिकी जनगणना रिपोर्ट के अनुसार, एशियाई भारतीय पुरुष आबादी की पूरे वर्ष की पूर्णकालिक औसत आय सबसे अधिक थी (+51,094), जबकि एशियाई भारतीय महिलाओं की औसत आय (+ 35,173) थी। भारतीय प्रवासी यू.एस में 50 प्रतिशत किफायती लॉज और 35 प्रतिशत होटलों के मालिक हैं, जिसका बाजार मूल्य लगभग + 40 बिलियन है। 2002 में भारतीय प्रवासी अमेरिका के 223,000 से अधिक फर्मों के मालिक थे और + 88 बिलियन से अधिक की आमदनी करते थे। नवीनतम जनगणना आंकड़ों का हवाला देते हुए एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका में भारतीयों की औसत घरेलू कमाई 123,700 अमेरिकी डॉलर और 79 प्रतिशत कॉलेज स्नातक हैं, जो धन और कॉलेज शिक्षा के मामले में कुल अमेरिकी आबादी से आगे निकल गए हैं।

नवंबर 2016 में 5 भारतीय अमेरिकी उम्मीदवारों रो खन्ना, राजा कृष्णमूर्ति, प्रमिला जयपाल और कमला हैरिस को यू.एस कांग्रेस में चुना गया, ऐसा करके उन्होंने एक नया इतिहास गढ़ा जबकि एमी बेरा को दूसरी बार चुना गया था। 2016 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावों में जीत हासिल करने के बाद, डोनाल्ड ट्रम्प ने उनका धन्यवाद करते हुए हिंदुओं की प्रशंसा करके भारतीय अमेरिकी लोगों की राजनीतिक भागीदारी पर प्रकाश डाला। अमेरिका में 2018 में 60 भारतीय प्रवासी उम्मीदवार संघीय चुनाव, राज्य विधानमंडल और स्थानीय कार्यालय सीटों के लिए चुनाव लड़ रहे हैं। वर्तमान में, ट्रम्प के मंत्रिमंडल में लगभग 9 भारतीय अमेरिकी वरिष्ठ सार्वजनिक पदों के प्रभारी हैं जैसे कि श्रीमती निक्की हेली – संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी राजदूत, कृष्णा आर उर्स – पेरू में अमेरिकी राजदूत, मनीषा सिंह – आर्थिक मामलों के लिए राज्य की सहायक सचिव, नील चटर्जी – संघीय ऊर्जा नियामक आयोग के सदस्य, राज शाह – राष्ट्रपति के उप सहायक और प्रधान उप प्रेस सचिव, विशाल अमीन – बौद्धिक संपदा (आई.पी) प्रवर्तन समन्वयक, नेओमी राव – सूचना और नियामक मामलों के कार्यालय (ओ.आई.आर.ए) की प्रशासक, अजीत वी पाई – संघीय संचार आयोग के अध्यक्ष और सीमा वर्मा – मेडिकेयर और मेडिकऐड सेवाओं के लिए केंद्रों की प्रशासक। ये स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि अमेरिकी राजनीति एक रूपांतरण से गुजर रहा है, जहाँ भारतीय मूल के अधिक से अधिक लोग अपनी कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प से राजनीतिक ऊंचाइयों को छू रहे हैं।

अमेरिका में भारतीय प्रवासी दोनों देशों के बीच संबंधों की पुनः रचना में योगदान दे रहा है। भारत दो कारणों के आधार पर भारतीय–अमेरिकियों के अविर्भाव को एक प्रतिष्ठित समुदाय के रूप में मान्यता देता है। पहला, भारतीय अमेरिकी लोग अमेरिकी चुनावी राजनीति में एक महत्वपूर्ण वोट बैंक के रूप में सामने आए हैं। दूसरा, भारतीय–अमेरिकी लोग काफी शिक्षित और बेहद अमीर हैं। जनसंख्या में वृद्धि और आर्थिक शक्ति में हिस्सेदारी के साथ, भारतीय अमेरिकी पैरवी का ध्यान भारत की समस्याओं की ओर झुक गया है। उदाहरण के लिए, अप्रवासन कानून के संबंध में, भारतीय प्रवासियों ने यू.एस की 1965 अप्रवासन नीति में भारतीयों के लिए अप्रवासन कानूनों के पक्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि भारतीय प्रवासियों का अभूतपूर्व ढंग से विकास हुआ है. 1960 और 1970 के दशक से लेकर 21 वीं शताब्दी में अमेरिकी समाज का एक आर्थिक और सामाजिक रूप से सुस्थापित हिस्सा बनने तक, प्रवासी भारतीयों ने निस्संदेह ही अग्रणी, अशिक्षित और कम कुशल किसानों से ऊपर उठकर वर्तमान में अधिक कुशल तीन मिलियन लोगों का एक मजबूत समुदाय बनाने की लंबी दूरी तय की है. भारतीय अमेरिकियों की समृद्ध सभ्यता और सांस्कृतिक लोकाचार अमेरिकी ताने–बाने का हिस्सा बन गया है, जहाँ दोनों देश भारतीय प्रवासियों को एक–दूसरे के लिए लाभकर मानते हैं। भारत की संस्कृति का प्रसार करने में भारतीय प्रवासियों की भूमिका गैर–सरकारी सार्वजनिक राजनयिकों और सांस्कृतिक राजनयिकों के माध्यम से राष्ट्र की ब्रांडिंग में भी योगदान दे रही है।

संदर्भिका

1. https://en.wikipedia.org/wiki/Indian_Americans
2. http://bit.ly/**47***i*VDWh
3. https://www.migrationpolicy.org/article/indian-immigrants-united-states
4. https://pravasindians.com/history-of-indian-diaspora-in-usa/
5. https://www.jagran.com/world/america-us-news-america-on-top-choice-for-indian-students-to-pursue-higher-education-as-per-odr-report-23579406.html
6. https://economictimes.indiatimes.com/nri/migrate/indians-in-us-wealthier-with-average-household-earning-of-123700 report/articleshow/85623601.cms?from=mdr